परमहंस विष्णुपुरी स्रो हुनक शिवगीत

लेखक

डॉ० रामदेव झा

मिथिला-भारती, अंक २, भाग १-४ में मुद्रित

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ
न: शृणवन्नूतिभि: सीद सादनम् ॥

जाहि मे गणपतिक स्तुति कएल गेल अछि ।

मूर्त्तिशास्त्रीय विवेचनक अनुसार गणपतिक सम्बन्ध यक्ष परम्परा सँ विशेषत: सम्बद्ध बुझना जाइछ। प्राप्त प्रतिमा मे अमरावती सँ प्राप्त गणेशक प्रतिमा सभ सँ प्राचीन थिक जकर निर्माणकाल दोसर शताब्दीक मानल जाइछ। मथुरा सँ सेहो उत्तर कुषाणकालक गणेशक दुइ गोट प्रतिमा प्राप्त भेल अछि। गुप्तकाल मे गणेशक पूजाक प्रचार अधिक रूपेँ भेल। फलत: ओहि कालक गणेशक प्रतिमा सम्पूर्ण भारतवर्ष मे उपलब्ध भेल अछि।



गणेशक प्रतिमा

मिथिलाक्षेत्र सँ प्राप्त ई गणेशक प्रतिमा जे चन्द्रधारी संग्रहालय, दरभंगा मे सुरक्षित अछि गुप्तकालीन थिक जकर लक्षण विष्णुधर्मोत्तर मे वर्णित प्रतिमाविज्ञानक लक्षण सँ मिलैत अछि। बौलक पाथरक बनल चतुर्भुज, साँपक यज्ञोपवीत धारण कएने, एकदन्त, माँथ पर मुक्ताक अलंकरणादि एहि प्रतिमाक विशेषता थिक। जेना कि गुप्तकालक कोनहु प्रतिमा मे मूँस केँ गणेशक वाहनक रूप मे नहि देखाओल गेल अछि, एहु प्रतिमा मे मूँसक वाहन नहि अछि।

बिहारक मुण्डेश्वरी (शाहाबाद), वेनीसागर (सिंहभूमि) आदि स्थानहुँ सँ किछु गणेशक प्रतिमा प्राप्त भेल अछि[२] जे गुप्त एवं उत्तर गुप्तकालीन प्रतिमा थिक। यद्यपि एहि सभ मूर्त्ति और मिथिलाक क्षेत्र सँ प्राप्त मूर्त्तिक प्रभामण्डल, बैसवाक आकृति साम्य तथा वाहनरूप मूँसक अभाव अछि तथापि मिथिलाक क्षेत्रक मूर्त्ति मे अपन विशेषता छैक। साँपक यज्ञोपवीत तथा माँथ पर मुक्तावलि आन मूर्त्ति मे नहि अछि। एहि सँ प्रतीत होइछ जे मिथिला-क्षेत्रक कलाकार प्रतिमा विज्ञानकेँ दृष्टि मे राखि शास्त्रानुकूल प्रतिमाक निर्माण करैत छलाह।

२ पटना संग्रहालय मे प्रतिमा सुरक्षित अछि।

परमहंस विष्णुपुरी ओ हुनक शिवगीत

लेखक

रामदेव झा

विष्णुपुरी पन्द्रहम शताब्दी मे प्रादुर्भूत अद्वैत वेदान्तानुयायी वैष्णव संन्यासी वा परमहंस मानल जाइत छथि। हुनक रचित 'श्रीभक्तिरत्नावली'[१] नामक ग्रन्थ भेटैत अछि। श्रीभक्तिरत्नावली मे तेरह गोट 'विरचन' अछि आ सभक पुष्पिका-वाक्य मे अपना केँ 'तैरभुक्त परमहंस' कहने छथि।[२] एही सँ जानल जाइत अछि जे ओ मिथिला-वासी छलाह। विष्णुपुरी स्वयं ओहि ग्रन्थक 'कान्तिमाला' नाम सँ टीका कयने छलाह।[३]

विष्णुपुरीक बंगालक सांस्कृतिक इतिहास मे बड़ महत्त्वपूर्ण स्थान छनि। 'भक्तिरत्नाकर'क साक्ष्य पर दिनेशचन्द्र सेनक कथ्य छनि जे ओ बंगीय समाज मे भागवत केँ लोकप्रिय बनौलनि तथा माध्व सम्प्रदायक वैष्णवमत केँ बंगाल मे सर्वप्रथम प्रेरणा भेटलैक। वैह सर्वप्रथम मध्वाचार्यक सम्प्रदायक हेतु बंगाल मे पथ प्रशस्त कयलनि।[४]

बंगाल सँ बाहरो विष्णुपुरीक उत्तम कोटिक वैष्णव भक्तक रूप मे प्रसिद्धि छलनि। वैष्णव जनमे हुनक त्रयोदश विरचन युक्त श्रीभक्तिरत्नावली अत्यन्त प्रिय छल। प्रसिद्ध वैष्णव नाभास्वामी अपन 'भक्त माल'नामक प्रख्यात ग्रन्थ मे विष्णुपुरीक निम्नलिखित रूप मे प्रशस्ति-गान कयने छथि—

भगवद्धर्म प्रधान आन कछु धर्म न देखा।
पीतर पटतर विगत निकश ज्यों कुन्दन देखा।
कृष्ण कृपा की बेलि फलित सत्संग दिखायो।
कोटि ग्रन्थ को सार त्रयोदश विरचन गायो।
महासिन्धु भागौ ततैं भक्ति रत्नराजी रची।
कलि जीव जँजाली कारणै विष्णुपुरी वड निधिरची[५]॥

---

१ भक्तिरत्नावली—सं० महेन्द्रनाथ लाहिड़ी, प्रयाग, १९९९ वि० सं०

१ तत्रैव, पृ० ६९, १०२, १२२, १५०, १८३, १९९, २२०, २२६, २२८, २३१, २३२, २३४, २४४

३ तत्रैव, पृ० २४४—इत्येषा बहुयत्नतः खलुकृता श्रीभक्तिरत्नावली
तत्प्रीत्यैव तथैव सम्प्रकहिता तत्कान्तिमालामया।

४ चैतन्य एण्ड हिज कम्पेनियन्स—दिनेशचन्द्र सेन, कलकत्ता यूनिवर्सीटी, कलकत्ता, १९१७, पृ० २९७, २९९

५ नाभास्वामी कृत भक्तमाल—ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स, बुक्सेलर, राजादरवाजा और कचौड़ीगली, वाराणसी, मूलछन्द-४७, पृ० २६८.

स्वयं भगवान् चैतन्य विष्णुपुरी सँ प्रेरित प्रभावित भेल छलाह। भक्तमालक टीकाकार प्रियादास उल्लेख कयलनि अछि जे जखन महाप्रभु जगन्नाथपुरी मे निवास करैत छलाह तखन विष्णुपुरी काशीवास करैत छलाह। कोनो भक्तक सूचना पर महाप्रभु विष्णुपुरी सँ भक्तिरत्नावलीक याचना पत्र द्वारा कयने छलथिन आ ओ अपन ग्रन्थ पठबाय देने छलथिन।[६]

विष्णुपुरी मैथिल छलाह से तँ हुनक ग्रन्थक पुष्पिका-वाक्ये सभ सँ सिद्ध अछि किन्तु समय ओ हुनक गुरुक सम्बन्ध मे ऐकमत्य नहि देखल जाइत अछि। 'भक्तिरत्नावली'क प्रकाशित प्रति मे ओकर रचनाकाल 'महायज्ञ-शर-प्राण-शशाङ्क गणिते शके'—शाके १५५५ (१६३३ ई०) केर उल्लेख अछि।[७] किन्तु एहि तिथि मे किछु गड़बड़ी भेल लगैत अछि। एहि ग्रन्थक सर्वप्रथम बंगला अनुवाद लौरीय कृष्णदास १४८७ ई० मे कयने छलाह।[८] कविकर्णपूर 'शाके वसु-ग्रह-मनुनैव युक्ते'—शाके १४९८ (१५७६ ई० मे रचित 'गौर गणोद्देशदीपिका' मे विष्णुपुरी ओ हुनक कृति 'भक्तिरत्नावली'क उल्लेख कयने छथि।[९] पन्द्रहम शताब्दीक अन्तिम चरणमे अनूदित तथा सोड़हम शताब्दीक अन्तिम चरण मे उल्लिखित ग्रन्थक रचना सतरहम शताब्दी केर पूर्वार्द्ध मे होयब सर्वथा अकल्पनीय लगैछ।

जँ श्रीभक्तिरत्नावलीक अनुवाद १४८७ ई० मे भेल तँ ओहि समय धरि ओ अवश्ये वार्द्धक्य ओ प्रसिद्धि कय लेने छल होयताह। पण्डित रमानाथ झा विष्णुपुरीक आविर्भाव काल १४२५ ई० ओ स्थिति काल १५०० ई० धरि मानने छथि।[१०] ई समय स्वाभाविको लगैत अछि। यदि एहि काल केँ सत्य मानि ली तँ विष्णुपुरी विद्यापतिक उत्तर

---

६ तत्रैव, पृ० २६८—

जगन्नाथपुरी माहिं बैठे महाप्रभु जी वे
चहुओर भक्त भूप भर अति छाइ है।
बोले कोऊ विष्णुपुरी काशी मध्य रहैं जाते।
जानियत मोक्ष चाह नीके मन आइ है॥
लिखी प्रभु चीठो आप मणिगण माल एक
दीजिये पठाय मोहि लागै जो सुहाइ है।
जान लई बात निधि भागवत रत्न दाम
दई है पठाय मुक्ति खेत के बहाई है॥

७ भक्ति रत्नावली, पृ० २४४

८ हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, भाग-१, पृ० २०८

९ श्रीगौरगणोद्देशदीपिका-कविकर्णपूर, सं० शशिभूषण वन्द्योपाध्याय, श्रीधाम, नवद्वीप, द्वितीय संस्करण, श्री चै० ४५६ अब्द, पृ० ११—

जयधर्म्मो मुनिस्तस्य शिष्यौ यद्गण मध्यतः।
श्रीमद्विष्णुपुरी यस्य भक्ति रत्नावली कृतिः॥

१० 'परमहंस विष्णुपुरी : हिज आइडेंटिटी एण्ड एज'—रमानाथ झा, पटना यूनिवर्सीटी जर्नल, जिल्द-१, खण्ड-२, जनवरी-१९४५, पृ० ७-२०

समकालिक एवं महाप्रभु चैतन्यक पूर्व समकालिक छल होयताह। चैतन्य द्वारा विष्णुपुरी सँ ग्रन्थयाचनाक किंवदन्तीक संगति सेहो बैसि जाइत अछि।

मिथिला मे एहि शताब्दीक आरम्भ धरि हिनक पूर्ण परिचय ज्ञात नहि छल। म०म० परमेश्वर झा तरौनी (दरभंगा जिला) गाम मे स्थित 'विष्णुपुरी डीह'क उल्लेख करितो ओकर इतिहास तथा विष्णुपुरीक परिचय सँ सर्वथा अनभिज्ञ छलाह।[११] परवर्त्ती अनुसन्धान सँ तथा पंजी-ग्रन्थक पर्य्यालोचन सँ तथ्य सभ प्रकट भेल अछि जे ओ कर्महा तरौनी मूलक मैथिल ब्राह्मण छलाह तथा पिताक नाम 'रतिधर', माताक नाम 'मौरा' एवं पितामहक नाम 'श्रीधर' छलनि। संन्यासग्रहण सँ पूर्व हुनक नाम 'रमापति' छलनि तथा पश्चात् विष्णुपुरी नाम धारण कयलनि।[१२]

सेन महोदय 'गौरगणोद्देशदीपिका'क आधार पर विष्णुपुरीक गुरु जयधर्म्म कें मानैत छथि।[१३] किन्तु एस०के०डे महोदय ओही ग्रन्थक आधार पर हुनक गुरुक नाम जयध्वज मानैत छथि। भक्तिरत्नावलीक पुष्पिका-वाक्य मे 'पुरुषोत्तम' शब्द देखि ओही ठाम ओ पुरुषोत्तमो कें हुनक गुरु मानि लेलनि अछि।[१४] डॉ० हृषीकेश गोस्वामी हुनका माधवेन्द्र पुरीक शिष्य कहलनि अछि।[१५] किन्तु गौरगणोद्देशदीपिका'क प्रकाशित प्रति सँ सेने महोदयक मत समर्थित होइत अछि।[१६] पुरुषोत्तमो जयधर्म्मेक शिष्य छलाह।[१७] अतः विष्णुपुरी ओ पुरुषोत्तम सतीर्थ्य छलाह। दोसर दिसि माधवेन्द्रपुरी पुरुषोत्तमक शिष्योपशिष्य शिष्य छलाह।[१८] ओ कोना विष्णुपुरीक गुरु भए सकैत छथिन? पुष्पिका-वाक्य मे उल्लिखित 'पुरुषोत्तम' सँ लेखकक तात्पर्य भगवान विष्णु मात्र अछि।

---

११ मिथिलातत्त्वविमर्श (पूर्वार्द्ध), पृ० १६५—
'महाराज शिवसिंहक रजबाड़ा सँ अव्यवहित पश्चिम तरौनी गाम अछि ओहि समय एहि गाम मे बहुत भारी विद्वान् सिद्ध पुरुष तथा श्रौत स्मार्त कर्म निपुण लोक बसैत छलाह, जे शिव सिंहक आश्रित भय अनेक ग्रामोपार्जन कयलें छलाह, विशेषतः कर्महे मूलक श्रोत्रिय ब्राह्मण छलाह; हिनका लोकनिक डीह गामक दक्षिण-पश्चिम मे छैन्ह, सम्प्रति ओहि डीह कें लोक सभ 'विष्णुपुरी डीह' कहैत अछि। एहि नामकरणक कारण अनुपयुक्त ओ अप्रामाणिक जानि नहि लिखल।'

१२ द्रष्टव्य टिप्पणी संख्या-१०

१३ चैतन्य एण्ड हिज कम्पेनियन्स, पृ० २९७, २९८

१४ अर्ली हिस्ट्री ऑफ वैष्णव फेथ एण्ड मुवमेंट इन बेंगाल—एस० के० डे, कलकत्ता, १९४२, पृ० १४ (टिप्पणी)

१५ 'मिथिला मे वैष्णव विचार धारा' पल्लव, दिसम्बर १९५७, पृ० २३

१६ श्रीगौरगणोद्देशदीपिका, पृ० ११

१७ तत्रैव, पृ० ११

जयधर्म्मस्य शिष्योऽभूद् ब्रह्मण्यः पुरुषोत्तमः।
व्यासतीर्थस्तस्य शिष्यो यश्चक्रो विष्णु संहिताम्।
श्रीमाल्लँक्ष्मीपतिस्तस्य शिष्यो भक्ति रसाश्रयः।
तस्य शिष्यो माधवेन्द्रो यद्धर्म्मोऽयं प्रवितितः।

१८ ऊपरिवत्

दिनेशचन्द्र सेन विष्णुपुरी कें माध्व सम्प्रदायक वैष्णव मानैत छथि।[१९] किन्तु एस०के० डे एकरा भ्रान्ति मानैत बिष्णुपुरी कें श्रीधर स्वामीक अनुयायी मानैत छथि तथा अपन मतक समर्थन मे हुनक एक गोट श्लोक उद्धृत करैत छथि।[२०] हुनका मतें ओहि समय मे प्रायः रहस्यवादी ओ भावात्मक संन्यासीक एकटा वर्ग उद्भूत भेल जे लोकनि भक्ति-साधना ओ अपन अद्वैत वेदान्तक विश्वास मे कोनो व्यतिक्रम नहि पबैत छलाह। अवश्ये एहने प्रकारक अद्वैत संन्यासी तिरहुतक विष्णुपुरी छल होयताह जनिका भ्रम सँ माध्व मतानुयायी कहि कए परिचय देल जाइछ।[२१]

विष्णुपुरी केवल परमहंस वैष्णव संन्यासीये नहि छलाह; ने केवल संस्कृते मे ग्रन्थ-रचना कयलनि। ओ एकटा भक्त कवि से हो छलाह आ मातृभाषा मे गीत-रचना सेहो करैत छलाह। एहि वस्तुक सर्वप्रथम सूचना भेटल नेपाल मे प्राप्त विद्यापति-पदावलीक अनुशीलन सँ। ओहि मे विद्यापतिक अधिकांश गीत अछि किन्तु अन्यो-अन्यो कविक एक-दूटा कए गीत भेटैछ। ताहि अन्य कवि मे विष्णुपुरीक सेहो एकटा गीत छनि।[२२] ओही गीत सँ सुधी-संसार जानि सकल जे विष्णुपुरी तत्कालिक लोक-भाषा मे सेहो गीत-रचना करैत छलाह। ओ गीत अछि मधुर रसक। पाछाँ कविशेखर बदरीनाथ झा कतहु सँ प्राप्त कए एकटा और गीत प्रकाशित करौलनि।[२३] एहि दोसर गीत मे कृष्ण-जन्मक एवं ओहि अवसर पर गोआरि सभ मे आयल उल्लासक चित्रण अछि। वैष्णव परमहंसक हेतु कृष्णजन्मोत्साह तथा मधुर रसक वर्णन करब सर्वथा स्वाभाविक अछि। एहि दुइये गोट गीत कें आधार मानि कवि विष्णुपुरीक काव्यक विषय-वस्तुक सीमा-निर्धारण कए देल गेल। किन्तु अल्पोपलब्धिक आधार पर समष्टिक सीमा-निर्धारण कथमपि भ्रान्तिहीन नहि भए सकैछ तकर ज्वलन्त उदाहरण अछि विष्णुपुरीक नवोपलब्ध तीन गोट गीत।

हमरा मैथिली शैव साहित्यक अनुसन्धानक क्रम मे हुनक तीन गोट शिव-विषयक गीत प्राप्त भेल अछि। ओहि गीत त्रयक आधार पर पूर्व निष्कर्ष मे संशोधन करब अपेक्षित भए गेल अछि जे ओ वैष्णव भक्त गीतकार छलाह। विष्णुपुरी मैथिल परम्परानुसार समन्वित भक्ति-साधनाक अनुयायी छलाह आ तें काव्यजगत मे कृष्णजन्म तथा मधुर रसक संग शिव-लीलाक वर्णन सेहो मैथिली भाषा मे कयलनि। एहि प्रकारक युगधर्म छल। एस० के० डे महोदयक मतक चर्चा ऊपर कैये आएल छी जे ओहि समय मे साधक अद्वैत वेदान्त एवं भक्ति-साधना मे वाध्य-बाधक सम्बन्ध

---

१९ चैतन्य एण्ड हिज कम्पेनियन्स, पृ० २९७-९८

२० अर्ली हिस्ट्री ऑफ वैष्णव फेथ एण्ड मुवमेंट इन बेंगाल, पृ०१४ (टिप्पणी)—

अत्र श्रीधर सत्तमोक्ति लिखने न्यूनाधिकं यद्भवेत्।
तत् क्षन्तुं सुधियोऽर्हन्त स्वरचना लुब्धस्य मे चापलम्॥

२१ तत्रैव, पृ० १४

२२ मित्र-मजुमदार, परिशिष्ट (ग), पद-५; सांग्स ऑफ विद्यापति, डॉ० सुभद्र झा, एपेंडिक्स 'ए', पद-४; विद्यापति-पदावली, भाग-१, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, पृ० ३७४

२३ मैथिली-गीत-रत्नावली—कविशेखर बदरीनाथ झा, दरभंगा, गीत-७

नहि मानैत छलाह। तखन वैष्णव ओ शैव भक्ति मे किएक द्वन्द्वक स्थिति रहैत ? नव वैष्णवधर्मक आदि पुरुष महाप्रभु चैतन्योमे तँ कोनो ने कोनो रूपमे समन्वयक भावना भेटितहि अछि। गोविन्द-कड़चा सँ पता लगैत अछि जे महाप्रभु समस्त भारतक शैव, शाक्त ओ वैष्णव तीर्थक समान श्रद्धा सँ भ्रमण कएने छलाह। ओ प्रत्येक मन्दिरक आगाँ श्रद्धानत भए जाइत छलाह। एतेक धरि जे अष्टभुजी कालीक मन्दिर मे सेहो अपन भक्ति-भावना प्रदर्शित कएने छलाह।[२४] विष्णुपुरीयो काशी मे महेशक निकटस्थ हरिमन्दिर[२५] मे रहैत भक्तिरत्नावली तथा ओकर कान्तिमाला टीकाक रचना कएने छलाह। तेँ विष्णुपुरी द्वारा शिवगीतक रचना ऐतिहासिक सन्दर्भ मे देखने सर्वथा स्वाभाविक लगैत अछि।

विष्णुपुरीक ओ तीनू शिव-गीत नेपालक मल्लराजा जगज्ज्योतिर्मल्ल (१६१३-१६३७ ई०) द्वारा विरचित 'हरगौरी विवाह' नाटक मे विद्यापति, सदानन्द, गोविन्द, रतन आदि अनेक कविक गीतक संग नाट्य-कथा-क्रम मे उद्धृत कएल गेल अछि। विष्णुपुरी भणित तीनू शिव-गीतक प्रामाणिकता पर सन्देह नहि कएल जा सकैछ, कारण 'हरगौरी विवाह'क कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (इंगलैंड) मे रक्षित एकमात्र हस्तलिखित प्रति नेपाल संवत् ७४९ (१६२९ ई०)क लिखित अछि।[२६]

जेना विष्णुपुरी संन्यासी ओ संसार-विरक्त छलाह तेना हुनक गीत मे आत्मनिवेदन ओ शरणयाचनाक भावक अपेक्षा कएल जा सकैत अछि, किन्तु से अछि नहि। तीनू गीत मे सँ दू टाक भणिता मे क्रमशः कहैत छथि—

१. विष्णुपुरी शिवदासे,
परि पूरथु मोर आसे,
२. ओहे जोगि जगत किसाने।

शिव आशा पुरौनिहार, जगत किसान अर्थात् सृष्टि-कर्त्ता छथि—एहन शिवक दास ओ अपना केँ घोषित करैत छथि। तेसर गीतक भणिता मे तँ ओ 'हाथ काँकण वाँध बूढ महेशे' कहि कए पार्वती केँ उपदेश दैत छथिन जे एकटा भक्ते कहि सकैछ। निकट भक्त मात्र।

तीनू गीत भक्ति-भाव सँ पूर्ण अछि तथा तीनू मे शिवक विविध लीलाक वर्णन-पूर्वक वन्दना कएल गेल छनि। आदिकालक मैथिली साहित्यक अध्येता केँ विष्णुपुरीक एहि गीत सभ मे नूतन अभिव्यक्ति-सरणिक दर्शन होएतनि। सहजहि ई कहब कठिन होएत जे विद्यापतिक रचना-पद्धति पर गीत रचलनि, प्रत्युत ई कहब समीचीन होएत जे विष्णुपुरीयो ओही परम्परा सँ प्रेरण ग्रहण कएलनि जाहि सँ विद्यापति ग्रहण कएने छलाह।

२४ चैतन्य एण्ड हिज कम्पेनियन्स, पृ० २३८

२५ भक्ति रत्नावली (लाहिड़ी), पृ० २४४
वाराणस्यां महेशस्य सान्निध्ये हरिमन्दिरे.........

२६ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय-पुस्तकालय, अतरिक्त पाण्डुलिपि संख्या—१६९५; हरगौरी विवाह नाटकक मूल रूप ओ विस्तृत परिचयक हेतु द्रष्टव्य हमर निबन्ध 'जगज्ज्योतिर्मल्ल ओ हुनक हरगौरी-विवाह नाटक', 'विदेह', सी० एम० कालेज (दरभंगा)क पत्रिका, १९६९-७०, पृ० ३-२९।

प्रथम गीत मेनाक द्वारा कहाओल गेल अछि। विवाहक समय मे मेना कहैत छथिन जे महादेवक यतीत्व देखल गेलनि। तपोवन मे तपस्वी छलाह, सकल गुण युक्त ओ शिर शशि धारण कएनिहार छलाह। किन्तु सभ जप-तप चल गेलनि, ओ रमणी पर अपन मन देलनि। ई की भेल ? ओ कपट सँ मधुबोल बाजि भवानीक हरण कए लेलनि। ज्ञानीयो भए कए एहन कएलनि ? कान्ह पर रुण्डमाला, परिधान मे व्याघ्रचर्म ओ फणिमाला धारण कएनिहार शिवक विष्णुपुरी दास छथि, हुनक आशा पूर्ण करथुन ओ दिगवास शिव।

दोसर गीत गौरीक उक्ति रूप मे उद्धृत अछि। अकिंचनता तथा ओहि पर सँ महादेवक परिहास—दुहुक असम्बद्ध परिस्थिति उपस्थित भेलें गौरीक मन मे उत्पन्न आक्रोशक बड़ सुन्दर वर्णन भेल अछि। महादेवक प्रति गौरीक उक्ति मे स्नेह ओ अनुरोध दुहूक स्वर वर्त्तमान अछि। कोनो आशा सँ तोड़ल गेल फूल जँ बसहाक घास भए जाइक तँ गौरीक क्रोध करब स्वाभाविके अछि।

तेसर गीत सेहो गौरीएक उक्ति थिकनि। घूमि-घूमि कए गौरी उपदेश पुछैत छथिन जे रूसल महेश कें की लए कए मनाबी। खाट, तुराइ शय्या हुनका नहि सोहाइत छनि। ओ जतए-ततए बाघछाल ओछा लैत छथि। क्षीर, कपूर, पान इत्यादि नीक वस्तु हुनका नहि सोहाइत छनि। ओकरा बदला मे आक ओ धुथूरक फूल हुनका खूब नीक लगैत छनि। विष्णुपुरी उपदेश कहैत छथिन जे बूढ़ महेशक हाथ कङ्कण सँ बान्हि दिअए।

विष्णुपुरीक भाषा अत्यन्त प्राञ्जल अछि। ओहि मे कतहु स्खलन नहि अछि। विद्यापतिक प्राचीन प्रामाणिक गीतक भाषा तात्त्विक स्वरूप सँ विष्णुपुरीक भाषा मे साम्य देखना जाइछ। मैथिलीक सम्बन्ध कारकक प्राचीन विभक्ति 'एरि' केर प्रयोग 'रुण्डेरि', 'बाघेरि' आदि मे देखल जाइछ जे महत्त्वपूर्ण अछि। क्रियापद मे 'बुझल', 'अछल', 'थिकह', 'गेला', 'भेला', 'देला', 'वोलथि', 'हरलह्नि', 'पूरथु', 'पवलह', 'हेरि हेरि हसे', जानल', 'तोरल', 'देह', मनाउब', 'सोहावए', 'ओछावए' आदि प्राचीन मैथिलीक व्याकरणक स्वरूप-निर्धारण मे महत्त्वपूर्ण सामग्री सिद्ध होएत।

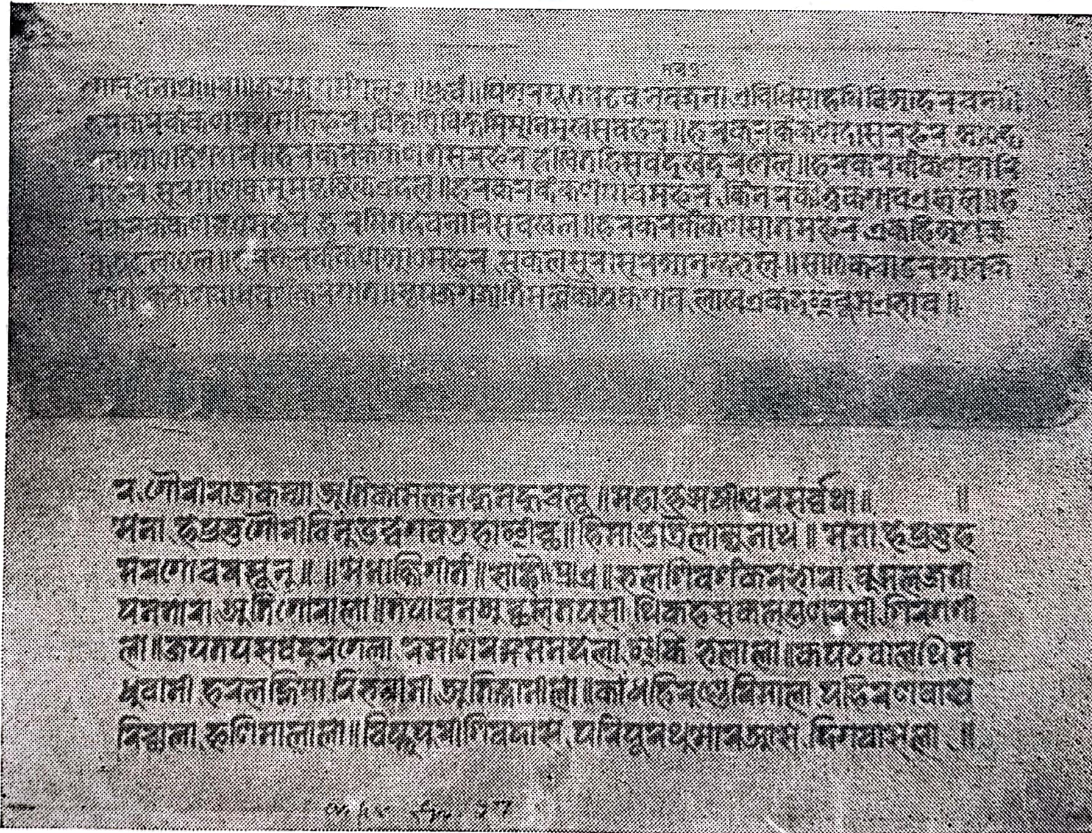
हम एतए विष्णुपुरीक नवोपलब्ध तीनू शिवगीतक संग हुनक पूर्वप्रकाशित दुनू गीत सेहो उद्धृत कए रहल छी जाहि सँ अध्येता लोकनि विष्णुपुरीक व्यक्तित्व, कवित्व ओ गीतक भाषातात्विक स्वरूप आदिक पर्यालोचन स्वयं कए सकथि।

(१)

॥ मेनोक्ति गीतँ ॥ सोहै ॥ प्र ॥ ए ॥

भल शिव शंकर भोरा,
वुझल जतीपन तोरा,
　　अति गोरा लो ॥
तपोवन अछल तपसी,
थिकह सकल गुण रसी,
　　शिर शशी लो ॥

जप तप सवे दुरा गेला,
रमणि रङ्ग मन देला,
इ कि भेला लो ।।
कपट वोलथि मधुवानी,
हरलन्हि मोरि भवानी,
अति ज्ञानी लो ।।
काँधहि रुण्डेरि माला,
पहिरण वाघेरि छाला,
फणि माला लो ।।
विष्णुपुरी शिव दासे,
परिपूरथु मोर आसे,
दिसवासे लो ।।[२७]



(हरगौरी विवाह नाटकक पाण्डुलिपि मे गीत विष्णुपुरीक)

(२)

।। गौर्य्युक्ति गीतं ।। राज विजय ।। चो ।।
तपसिआ तोरे तपे केओ न भिखारी,

---

२७ हरगौरी विवाह नाटक, यथार्थ पृष्ठ संख्या–२४ (१ ख)

पवलह　　　राजकुमारी ।। ध्रुवं ।।
तपसिआ मोरे मुख हेरि हेरि हसे,
तोरा मुख कत रूप वसे ।।
जटा जूट फोट गोट चन्दा,
जानि जानल धूरिफन्दा ।।
फूल तोरल मए आसे,
सेओ भेल वसहक घासे ।।
विष्णपुरी हेन भाने,
ओहे जोगि जगत किसाने ।।[२८]

(३)

।। गौर्य्युक्ति गीतं ।। आर्सव (?) ।। जति ।।
भमि भमि पुछे गोरि, देह उपदेशे,
माइ हे, कि देव मनाउव रुसरे महेशे ।।
खाट तुरैआ सेज हुनि, न सोहा वए,
जतहु कतहु वाघछाल ओछावए ।।
क्षीर कपूर पान हुनि न सोहावे,
आक धुतुर फुल तहिन भल भावे ।।
विष्णपुरी कहे, हित उपदेश,
हाथ काँकँण वाँध वूढ महेशे ।।[२९]

(४)

प्रथम बएस जत उपजल नेह
एक परान एक जनि देह ।
तइसन पेम जदि बिसरह मोर
काठहु चाहि कठि (न) हिअ तोर ।। ध्रु०
ए प्रभु ठाकुर न तेजह नारि
तोह बिनु लागब कओन ओहारि ।।[३०]
सुपुरुस चिन्हिअ एहे परिनाम
जैसन प्रथम तेसन अवसान ।।
टुटल पेम नहि लाग एक ठाम
विष्णु पुरी कह बुझसि विराम ।।[३१]

---

२८ तत्रैव यथार्थ पृष्ठ संख्या—२९ (४ क)–३० (४ ख)
२९ तत्रैव, यथार्थ पृष्ठ संख्या—३२ (५ ख)-३३ (६ क)
३० 'गोहारि' के' 'ओहारि' तँ ने पढ़ल गेल अछि ?
३१ विद्यापति-पदावली, भाग–१, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, पृ० ३७४

(५)

हे सखि हे सखि कहिओ न जाहे ।
नन्दक अङ्गना[३२] कइसन उछाहे ।।
नन्दक नन्दन त्रिभुवन सारे ।
यशोदें पाओल ननजे कुमारे ।।
मन भेल हरखित देखि तनुरूपे ।
जनि भेल उदित दीप अंधकूपे ।।[३३]
आसलता पल्लव जनि देला ।
मेदिनि सुरतरु आँकुर भेला ।।
विष्णपुरी कह सुनह गोआरी ।
परम जोति अवतरल मुरारी ।।[३४]

३२ छन्दानुरोधें 'अँगना' पाठ उचित ।
३३ छन्दानुरोधें 'अँधकूपे' पाठ उचित ।
३४ मैथिली गीत-रत्नावली, गीत संख्या-७